पूर्वोत्तर सृजन पत्रिका: विशेषज्ञों द्वारा समीक्षित वार्षिक हिंदी ई-पत्रिका

वर्ष: 2; संख्या:2; 2021; पृष्ठ संख्या: 101-107

लोथा लोककथाएँ

✍ संग्रह एवं हिन्दी अनुवाद : टी हेलेन कीकोन

1. गाँव वाले और अप्व्हो

एक गाँव में अप्व्हो नाम का एक आदमी रहता था। वह बहुत धूर्त था। सारा गाँव उससे परेशान रहता था। एक बार गाँव वालों ने उसे सबक सिखाने की सोची। वे उसे एक बड़े तालाब के ऊपर लता की रस्सी से बने झूले के पास ले गये। सब बारी-बारी से झूला झूलने लगे। उन्होंने अप्व्हो को सबसे अंत में झूलने की अनुमति दी। फिर वे उसे झूले पर बिठाकर जोर-जोर से हिचकोले खिलाने लगे ताकि वह झूलते–झूलते थक जाए और उतरने के चक्कर में तालाब में गिर कर डूब जाए।

अप्व्हो झूला झूलते–झूलते थक गया था और वह किसी ऐसे स्थान की तलाश कर रहा था जहाँ कूद सके। लेकिन वह ऐसा न कर सका, ज्यादा थक जाने की वजह से उसमें रस्सी को पकड़ कर रखने की हिम्मत भी नहीं बची थी। तभी पड़ोसी गाँव के आभूषण से सजे एक नवदम्पति मिथुन को लेकर वहाँ से गुजर रहा था। अप्व्हो ने अनुमान लगा लिया था कि ये युगल पड़ोसी गाँव के होंगे। इसलिए उसने पुकारा "वहाँ कौन जा रहा है? इधर यहाँ आ जाओ और झूला झूलते हुए सुहानी हवा का आनंद लो।"

उन्हें झिझकते हुए देखकर उसने फ़िर कहा, "अपने कपड़े और आभूषण उतार कर ज़मीन पर रख दो और मेरे साथ झूले का मज़ा लो। मिथुन को एक ओर बांध दो और एक टेढ़ी लकड़ी खोज कर मुझे उस छड़ी से खींचकर उतार लो।" उस समय गर्मी बहुत थी और उन्हें ललचाया जा रहा था इसलिए उन्होंने अपने आभूषण उतार कर जमीन पर रख दिये, फिर एक छड़ी से अप्व्हो को खींच लिया और स्वयं उस झूले में चढ़ कर ख़ुशी से झूलने लगे।

वे बहुत देर झूलते रहे और झूलते-झूलते थक गये थे। इसलिए उन्होंने अप्व्हो से अनुरोध किया, "कृपा करके हमें खींच लो, हम बहुत थक गये हैं, वरना गिर जायेंगे।" अप्व्हो इसी क्षण की प्रतीक्षा

कर रहा था।" उसने तुरंत उन्हें उतारने के बजाय तालाब में धक्का दे दिया और उनके वस्त्र–आभूषणों को पहन कर अपने साथ मिथुन को बांध कर गाँव की ओर चला गया । गाँव वालों ने जब उसे देखा वे चौंक पड़े। लोगों ने पूछा, "तुम्हें ये वस्त्र-आभूषण और कहाँ से मिले।" अप्व्हो ने एक पल गवाये बिना जवाब दिया, "तालाब के बीचों–बीच बहुत सुन्दर–सुन्दर वस्त्र, आभूषण और मिथुन हैं, लेकिन मैंने केवल उतना ही लिया, जो अभी मेरे पास हैं। अगर तुम्हें भी चाहिए तो स्वयं तालाब में कूदो और ले लो।" गाँव के भोले–भाले लोग फिर से अप्व्हो के चंगुल में फँस गये और अप्व्हो से मिन्नतें करने लगे कि उन्हें भी वहाँ ले जाए, जहाँ से उसे ये सब वस्तुएं मिली हैं। अप्व्हो शुरू में, उन्हें न ले जाने की इच्छा का नाटक करता रहा और बाद में सभी गाँव वालों को तालाब तक ले गया । एक-एक करके उसने सभी को जोर से तालाब में धकेलते हुए कहा, "जाओ और अपने हिस्से का आभूषण और मिथुन ले लो ....जाओ और अपने हिस्से का आभूषण और मिथुन लो।" इस प्रकार उसने बदले की आग में सभी को एक-एक करके तालाब में डुबो दिया।

गाँव में एक अंधी औरत भी थी, वह दिखाई न देने के कारण वह अंत में पहुँची। तालाब के किनारे उसका पैर अप्व्हो द्वारा नीचे रखे दाव से जा टकराया और उसके मुँह से निकला, "अगर मेरे जैसी अंधी औरत यह पा सकती हैं तो और गाँव वालों को जरूर बहुत कुछ मिला होगा।" इसी बीच अप्व्हो उसके पास आया और पूछा, "बूढी माँ! आप यहाँ क्या कर रही हो? आप भी तालाब के अन्दर जाओ।" यह कहकर उसने उस बूढ़ी औरत को भी तालाब के बीच धकेल दिया ।

इस तरह जिन गाँव वालों ने अप्व्हो को डुबोने की कोशिश की थी, वे अपने बिछाए जाल में खुद ही फँस गये और चतुर अप्व्हो बच निकला।

2. अप्व्हो और बाघ

एक बार अप्व्हो और बाघ जंगल में गये। सुबह–सुबह वे झरने और चट्टानों से गुजर रहे थे। तभी घनी झाड़ी के पास उन्होंने किसी जानवर द्वारा मारे गये ताजे पशु का शव देखा । वे अपनी किस्मत पर मुस्कुराये। अप्व्हो ने कहा, 'हमें और आगे जाने की जरूरत नहीं है। आओ हम दोनों इसका बँटवारा करके घर ले चलते हैं।" बाघ भी यह सुनकर बहुत उत्साहित हो गया। क्योंकि ज्यादा

प्रयास किए बिना उन्हें कुछ दिनों के लिए पर्याप्त मांस मिल गया था।

चालाक अप्व्हो ने मांस बाँटने का कार्यभार संभाला। उसने अपने हिस्से में सारे मांस वाले भाग को रख लिया और बाघ के लिए हड्डियों वाला हिस्सा रख दिया। अप्व्हो को मांस का कम हिस्सा लेते देख कर बाघ ने अप्व्हो से कहा कि मुझे इतना मत दो, हमें बराबर बाँटना चाहिए। लेकिन अप्व्हो ने बड़े विनम्र स्वर में जवाब दिया कि तुम्हारा शरीर मुझसे बड़ा है, इस हिसाब से तुम्हें मुझसे ज्यादा मांस की जरूरत है। बाघ अप्व्हो की चालाकी से बेखबर था। इसलिए वह सन्तुष्ट था। उसने अप्व्हो को धन्यवाद दिया।

बाघ की बात सुनकर अप्व्हो अन्दर ही अन्दर बाघ की मूर्खता का मजाक उड़ा रहा था, क्योंकि बाघ को अहसास ही नहीं था कि उसने कम क्यों लिया। अप्व्हो यह सोचकर वहाँ से उठ गया कि उसे ओख्यु (पीठ पर उठाने वाली बाँस की बनी त्रिकोणीय टोकरी) बनाने के लिए बाँस की आवशयकता थी। वह बाँस खोज रहा था, तभी बाघ ने पूछा- "हमारे पास इतना मांस हैं, हम इसे घर कैसे ले जायेंगे।"

उसने बिना पीछे मुड़े जवाब दिया "हम बाँस का ओख्यु बनाएँगे", और यह कहकर वह बाँस के जंगल में अंदर की ओर चला गया। उसने बाँस के छोटे-छोटे पेड़ काट कर अपने लिए बाँस का एक ओख्यु बनाया और सहारे के लिए एक तना लिया। बाघ के लिए भी एक ओख्यु बनाया था, लेकिन उस ओख्यु को बाँस के पेड़ को काटे बिना बनाया था और उसे एक सीधे पेड़ के साथ गूँथ कर रख दिया। उसके बाद अप्व्हो अपने हिस्से के मांस को ओख्यु में भर कर चला गया और गाँव जाकर मांस दे कर उसके बदले में चावल लेने लगा।

बाघ ने भी अपने हिस्से का मांस ओख्यु में भर दिया, लेकिन जब ओख्यु को उठाने की कोशिश की तो वह उठा ही नहीं पा रहा था, क्योंकि अप्व्हो ने चालाकी से उसके ओख्यु को पेड़ से अलग किए बिना उसी में गूँथ दिया था। लेकिन उसे यह समझ ही नहीं आया कि उसके साथ चालाकी हुई है। उसे लग रहा था कि ज्यादा भारी होने के वजह से उठाने में मुश्किल हो रही है, इसलिए हल्का करने के लिए उसने एक–एक कर हड्डी को यह कहते हुए "क्या इसकी वजह से भारी हो रहा है .....क्या इसकी वजह से भारी हो रहा है, निकाला और उसमें चिपके हुए मांस के टुकडों को वह तब तक खाता रहा जब तक की ओख्यु से हड्डियाँ खत्म नहीं हो गईं और अंत में खाली हाथ घर लौट गया।

3. अप्व्हो और यात्री

एक बार अप्व्हो एक नई जगह की यात्रा पर निकल रहा था तभी उसकी मुलाकात एक अजनबी से हुयी, लेकिन उसने अप्व्हो के बारे में कई किस्से सुन रखे थे और उनसे बहुत प्रभावित भी था। वे एक-दूसरे से मिलकर बहुत खुश थे। वह व्यक्ति अप्व्हो के कुछ कारनामों को बड़े आनंद से सुन रहा था। तभी एक सुंदर पोशाक पहने आदमी वहाँ से गुजरा। उसने एक नये दाव (एक तरह की बड़ी छुरी) को लकड़ी के बने धारक में डाल रखा था।

अजनबी के मन में अप्व्हो को परखने की बात आयी। इसलिए उसने अप्व्हो से कहा, "लोग कहते हैं कि तुम बहुत चालाक हो और किसी को भी चतुराई में मात दे सकते हो। यदि उस आदमी को छल कर दाव ले आओ तो में समझूँगा कि लोगों ने तुम्हारे बारे में जो कहा है, वह सच है।"

अप्व्हो ने कहा- "ठीक है, अगर ऐसी बात है, तो तुम बस देखो में क्या करता हूँ।" अप्व्हो उस अजनबी के पास 'शुमो प्व' (लौकी से बने कप/कटोरा) में चावल से बनी शराब लेकर गया और कहा "हे अजनबी आज बहुत ही गर्मी है और शायद आपका गला भी सूख रहा होगा कुछ देर आराम कर चावल से बनी इस शराब का एक घूँट ले लीजिए।" अजनबी ने अप्व्हो की इस चतुराई की सराहना की, वह मुस्कराया और अप्व्हो के पास आकर बैठ गया।

अप्व्हो ने फिर बहाना करते हुए उससे कहा "माफ़ करना, मेरे पास तुम्हे पेय की पेशकश करने के लिए अच्छा कटोरा भी नहीं है । क्या आप मुझे अपना दाव उधार दे सकते हैं, ताकि मैं आपके लिए एक प्याला बनाने के लिए कुछ बाँस काट सकूँ।"

अजनबी ने अप्व्हो को अपना नया दाव सौंप दिया। फिर क्या था, अप्व्हो दाव लेकर दूर जंगल की ओर निकल गया और यह सोचकर कि अब तक अजनबी हारकर चला गया होगा, वह वापिस नहीं आया और जंगल में ही रहा। काफी देर बाद उसने आकर उसे आवाज दी,- "हे अजनबी यात्री!" तब चौराहे पर इंतजार कर रहे अजनबी ने कहा, "मैं इधर हूँ।"

अप्व्हो ने नाराज होते हुए कहा- "मैं पहले चौराहे से बात करके आता हूँ।" इसके बाद वह खुद का बनाया हुआ एक गीत गुनगुनाते हुए रास्ते से होते हुए दूसरे रास्ते, जहाँ पहला अजनबी इंतजार कर रहा था, वहाँ आ गया और उसे दाव दिखा दिया। अजनबी ने उसके किस्सों को सच मान लिया।

4. अमीर आदमी और कृतघ्न ग्रामीण

एक पहाड़ की तलहटी में एक बड़ा-सा गाँव था। उस गाँव में लिकोंथंग नाम का एक अमीर लेकिन परोपकारी आदमी रहता था। परोपकारी होने के कारण गाँव वाले उसका आदर करते थे। मुसीबत के समय सभी गाँव वाले उसकी चारों ओर घूमते थे और उसकी सलामती की कामना करते थे। इसलिए मदद के बदले वह अपने खेत से विधवाओं, कमजोर लोगों और बुजुर्गों को उनकी प्रार्थना और आशीर्वाद के लिए उपहार में और कुछ को ऋण के रूप में अनाज देता था।

एक रात उस आदमी का पालतू कुत्ता भौंकने लगा। उसे देखकर गाँव के अन्य कुत्तों ने भी भौंकना शुरू कर दिया। साथ ही, अमीर आदमी अचानक बीमार भी पड़ गया, इधर कुत्तों का भौकना जारी रहा। उसकी पत्नी ने बाहर जाकर कुत्तों को फटकार लगाते हुए कहा – "शांत हो जाओ तुम्हें नहीं पता कि तुम्हारे मालिक बीमार हैं। उन्हें आराम करने दो।"

लेकिन कुत्ते चुप नहीं हुए। कुछ देर बाद वह फ़िर चिल्लायी, "तुम्हें हुआ क्या है?" यह सुनकर कुत्ते ने बाड़े के अन्दर से तो भौंकना बंद कर दिया, लेकिन घर के पिछवाड़े जाकर फिर से भौंकना शुरू कर दिया। पत्नी अचंभे से बड़बड़ाते हुए अन्दर चली गयी। क्योंकि कुत्ते ने ऐसा व्यवहार कभी नहीं किया था। "कोई बात नहीं रहने दो" अमीर आदमी ने कराहते हुए कहा। लेकिन इससे उसकी बीमारी और बढ़ गयी थी। और मुर्गे की बांग देने से पहले ही वह गुजर गया।

सभी गाँव वाले हैरान होकर अमीर आदमी के घर जाते वक्त रास्ते में एक-दूसरे से कहने लगे "पिछली रात जरूर उनके पालतू कुत्ते और अन्य कुत्तों ने उनकी आत्मा को मृत्युलोक पर जाते देखा होगा।" कुछ लोग विधवाओ के बारे में और कुछ खुद के बारे में अशुभ सोचकर परेशान हो गये थे, जबकि कुछ लोग सचमुझ शोक मना रहे थे। कुछ मगरमच्छ के आँसू बहा रहे थे। क्योंकि उनमें से कुछ लोगों ने उस आदमी से बहुत सारा अनाज ले रखा था और वे लौटा नहीं पा रहे थे।

छठवें दिन परंपरा के अनुसार अमीर आदमी की आत्मा की विदाई के लिए एक दावत की व्यवस्था की गयी।

इसके कुछ दिन बाद कुछ गाँव वाले, जिन्होंने अमीर आदमी से अनाज उधार लिया था, उस आदमी के घर गये और उसकी विधवा पत्नी के साथ बदतमीजी से पेश आते हुए बोले, "हे विधवा, तुमने और तुम्हारे पति ने हमसे जो अनाज लिया था, उसे लौटाओ!"

गाँव वालों की ये बात सुनकर वह स्तब्ध होकर बोली, "हे भगवान, हमने कभी किसी से अनाज नहीं लिया। तुम लोग क्यों झूठे आरोप लगा रहे हो? इसके विपरीत तुम ही लोगों ने हमसे अनाज उधार लिया था। अब चुकाने के बदले तुम लोग इतना मतलबी हो गये हो कि अपनी बात से मुकर कर उल्टा आरोप लगा रहे हो। मेरे प्यारे पतिदेव की आत्मा को शांति मिले। आप सभी के साथ उनकी इतनी सहानुभूति थी कि उन्होंने आप लोगों से ब्याज तक लेने से इंकार कर दिया था, जबकि मैंने उनसे कहा था कि कम से कम औपचरिकता के लिए ब्याज लिया करें।"

तब गाँव वाले ये कहते हुए पीछे हट गये, "क्या आप में कोई स्वाभिमानी नहीं है? देखो, यह लालची विधवा हमें धोखा दे रही है, इसी कारण हकला रही है।" इस तरह कुछ देर तक वे उसका अपमान करके वे चले गये । कुछ लोग उससे सहानुभूति भी रखते थे, लेकिन कोई भी खुद को नहीं उलझाना चाहता था।

इधर विधवा ने काफी देर सोच-विचार किया, "अगर वे दावा करते हैं तो मुझे शमन (अच्छी औरत) से मदद लेनी होगी, जो दिवंगत आत्मा से बात कर सकती है और इन आरोपों को मेरे मृत पति की आत्मा तक पहुँचा सकती है। अगर जरूरत पड़ी तो मुझे एक बार उसे पृथ्वी लोक में बुलाना होगा।" इस तरह रात को शमन को कब्र के पास बुलाकर विधवा ने अपने पति को पृथ्वी लोक भेज देने के लिए आत्माओं से विनती की। अमीर आदमी ने शमन के माध्यम से अपनी पत्नी की पीड़ा भरी पुकार सुनी । वह अपनी पत्नी के पास आया, जो मृत्यु-लोक के द्वार पर खड़ी होकर इंतजार कर रही थी ।

अमीर आदमी ने पुकार कर कहा- " हे शमन, पृथ्वी लोक में मेरी पत्नी बहुत दुविधा में है। जिन गाँव वालों को मैंने मुसीबत के समय दया करके कर्ज के रूप में अनाज दिया था, अब वे मेरी पत्नी पर आरोप लगा रहे हैं कि हमने उनसे अनाज उधार लिया था। वे अपनी कृतज्ञता भूल गये हैं और लालची हो गये हैं। इतना ही नहीं मैंने अपनी पत्नी और छोटी बेटी के लिए जो कुछ भी बचा कर रखा था वे उससे छीनने की कोशिश कर रहे हैं। मैं आपसे विनती करता हूँ कि आप मुझ पर दया करें, ताकि मैं एक बार अपने परिवार से मिल सकूँ और समस्या का समाधान कर सकूँ। मेरे वहाँ उपस्थित हुए बिना समस्या का समाधान नहीं हो सकता।"

मृत्यु-लोक के द्वार पर की महिला ने एकाग्रचित होकर यह बात सुनी। उसे अमीर आदमी पर दया आ गई और कहा "ठीक है ,तुम एक बार इस समस्या को सुलझाने पृथ्वी लोक में जा

सकते हो, लेकिन ध्यान रखना उन लालची गाँव वालों के लिए कोई दया मत रखना।"

इस तरह उसका मृत शरीर पृथ्वी लोक में अपने लकड़ी के बिस्तर पर आ गया। उसने गाँव के बुजुर्गो और उन लोगों को बुलाया जिन्होंने उसे चावल उधार लिया था। उसने उन सभी ग्रामीणों के नाम पढ़े जिन लोगों पर उसने भरोसा किया था। इस पर गाँव के बुजुर्ग नाराज हो गये। उन्होंने कहा " तुम बेशर्म लोग, जब ये जीवित थे तब तुम लोगों को परेशानी में देख कर कर्ज दिया करते थे। क्या तुम लोगों को उसे याद दिलाने के लिए मृत्युलोक से बुलाने की आवश्यकता है? उसकी शांति में खलल क्यों डाली। जिन-जिन लोगों ने कर्ज लिया था, उन सभी लोगों को उनके परिवार को सात गुना चुकाना होगा।" - ऐसा बुजुर्गों ने आदेश दिया।

जैसे ही फैसला सुनाया गया लिकोंथंग मृत्युलोक में वापस चला गया। द्वार पर नजर रखने वाली महिला ने पूछा "लोग कैसे हैं? और क्या तुमने अपने परिवार की दुविधा का हल किया?" उसने कहा, "हाँ मेरे पास एक अच्छी पत्नी थी । ईश्वर की मुझ पर बहुत कृपा थी। जब मैं पृथ्वी लोक में था मेरे पास जितना धन आता, उससे गाँव वालों की संकट में मदद किया करता था। लेकिन मेरे मृत्युलोक में आने के बाद उन्होंने उल्टा बर्ताव करना शुरू किया।"

द्वार पर महिला ने उड़ान भरते हुए कहा, "मैं उन लालची और बुरे लोगों को ऋण नहीं दूँगी, जिनके कारण तुम्हें मृत्युलोक से वापस आकर ऐसा करना पड़ता है। यह आनंद से रहने का स्थान है। मैं उन्हें परेशानी और कठिनाई भरी जगहों पर भगा दूँगी। हाँ, तुम अच्छे इन्सान हो, अन्दर जाओ और आनंद से रहो।" मुस्कराते हुए महिला ने उसे बुला लिया। एक पुरानी कहावत है कि कभी कर्ज नहीं छोड़ जाना चाहिए। तभी आप मृत्यु लोक में आनंद से रह सकते हैं।

संपर्क-सूत्र:

एस. सी.ई.आर.टी कोहिमा, नागालैंड